मइकल लिपचिल

विलियम एस. बरोज

विवादों मे जीने वाला उपन्यासकार

अंजुम नईम

बीट आंदोलन के दौरान जिन लोगों को अधिक प्रशंसा मिली, उनमें विलियम एस. बरोज सबसे रंगारंग व्यक्तित्व के मालिक और सबसे अधिक पढ़े जाने वाले लेखक हैं। नशीले पदार्थों के इस्तेमाल, समलैंगिकता और नग्नता को बढ़ावा देने और नकारवाद के चलते गिरफ्तार होने के बावजूद उन्हें 20वीं शताब्दी के उन बड़े लेखकों में गिना जाता है जिन्हें अपने जीवन में ही बड़ी ख्याति हासिल हो चुकी थी। उनके उपन्यास लेखन, आध्यात्मिक लेख, सामाजिक विषयों पर आलोचनात्मक आलेख और कला पर उनकी पकड़ के कारण उन्हें बड़ी लोकप्रियता मिली। नॉरमन मिलर के इस वक्तव्य से इनकार की कम ही गुंजाइश बचती है कि वह समकालीन युग के अकेले ऐसे अमेरिकी उपन्यासकार हैं जिन्हें प्रकृति ने स्वाभाविक तौर पर गैरमामूली बुद्धि प्रदान की है।

विलियम एस. बरोज का जन्म फरवरी 5, 1914 को सेंट लुई, मेसूरी के एक बड़े और खाते-पीते घराने में हुआ। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा जॉन ब्रोल न्यू मेक्सिको से हासिल की। पढ़ाई-लिखाई का आरंभिक दौर उनके लिए बहुत बंदिशों वाला था लेकिन इसी ठोस नींव ने उन्हें अपने आने वाले जीवन में कठिनाइयों से जूझने और उनसे उबरने का साहस दिया। बरोज का दुर्भाग्य ही था कि आरंभ से ही उन्हें दोस्तों का जो समूह मिला वह समाज के अप्रिय लोगों से जुड़ा था। अभी वह लोस अलमास स्कूल में ही थे कि नशे की दवाओं के सेवन के जुर्म में उन्हें उनके सारे मित्रों समेत स्कूल से निकाल दिया गया। बाद में उन्होंने सेंट लुई के टेलर स्कूल से हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। वर्ष 1932 में उन्होंने कला में डिग्री हासिल करने के लिए हार्वर्ड विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। यह वह दौर है जब बरोज न्यूयार्क सिटी के गे-सब कल्चर का भाग बने और जो उनके आने वाले जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला था। वर्ष1936 में बरोज ने हार्वर्ड से स्नातक किया। घर से लगातार वित्तीय सहायता जारी थी, इसलिए स्नातक के बाद उन्होंने एक लंबी यात्रा की योजना बनाई और पूरे यूरोप के भ्रमण पर निकल पड़े। पांच वर्ष बाद वह अमेरिकी सेना में शामिल हो गए लेकिन जल्दी ही मानसिक कारणों के चलते सेना से निलंबित हो गए।

न्यूयॉर्क में रहने के दौरान ही उनकी मुलाकात एलन गिंस्बर्ग और जैक कीरॉक से हुई और यह भेंट जल्दी ही मित्रता में बदल गई। 1944 से बरोज पूरे तौर पर कीरॉक और जॉन वूल्मर एडम्स के साथ एक ही मकान में रहने लगे। वूल्मर के साथ उनकी रिहायश वैवाहिक जीवन में बदल गई। 1947 में जब नशे के धंधे में लिप्त होने के कारण वह कठिन जीवन व्यतीत कर रहे थे। तो उनके यहां बेटा पैदा हुआ जिसने उन्हें अपने जीवन में बदलाव लाने पर बाध्य किया। वर्ष 1948 में वह न्यू आर्लिएंस चले गए। लेकिन उनके जीवन में कोई सुख लिखा ही नहीं था। 1951 में एक पार्टी में बरोज की पिस्तौल से अनजाने में चली एक गोली से वूल्मर की मृत्यु हो गई और एक बार फिर बरोज नशे की दुनिया में वापस चले गए। रचनात्मक दृष्टि से उनका यह दौर बेहद महत्वपूर्ण है। दो साल के भीतर उनके दो उपन्यास *जंकी* और *कुय्यर* प्रकाशित हुए। इसी बीच साहित्यिक विषयों पर एलन गिंस्बर्ग के नाम उनके लिखे गए पत्रों के संग्रह के प्रकाशन से उन्हें साहित्यिक क्षेत्र में बहुत लोकप्रियता मिली।

वर्ष 1959 में उनकी सुप्रसिद्ध कृति *नैक्ड लंच* प्रकाशित हुई और उसने तहलका मचा दिया। नग्नता फैलाने के इल्जाम में कुछ देशों में उस पर प्रतिबंध लगा दिया गया और खुद अमेरिका में मैसाच्यूसेट्स में नग्नता के आरोप में मुकदमा चलाया गया। हालांकि वह उस आरोप से बरी कर दिए गए लेकिन कुछ समकालीन लेखकों की नजरों में वह गिरे ही रहे और उन्हें उस क्षेत्र में वह लोकप्रियता नहीं मिली जिसके वह हकदार थे। वर्ष 1961 में उनकी किताब *द सॉफ्ट मशीन*, उसके एक साल बाद *द टिकट दैट एक्सप्लॉइटेड* और 1963 में *नावा एक्सप्रेस* प्रकाशित हुई। उनकी दूसरी महत्वपूर्ण कृतियों में सॉफ्ट मशीन, द फिंगर टॉक्स, द वाइल्ड ब्वॉयज, द प्लेस ऑफ डेड रोज, द वेस्टर्न लैंड और कहानियों के संकलन में रोजवेल्ट आफ्टर इनॉग्रेशन, आदि प्रसिद्ध हुई। वर्ष 1970 से 1990 तक का दौर कुछ चैन का दौर था। यह वह दौर था जब वह न्यूयॉर्क सिटी आ गए थे और अपने दोस्त कीरॉक के प्रयत्नों से न्यूयॉर्क सिटी कॉलेज में अध्यापक के रूप में काम करने लगे। 1983 में वह अमेरिकन अकादमी और इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ट्स एंड लेटर्स से जुड़ गए। अगस्त 2, 1997 को दिल की बीमारी ने उनके जीवन की ज्योति को बुझा दिया। उनकी मृत्यु के कुछ ही महीनों बाद उनकी कृतियों का एक संकलन वर्ड वाइर्स के नाम से प्रकाशित हुआ जिसे बीट साहित्य के रत्नों में रखा जाता है।

उनकी कुछ कृतियां जब उनके जीवनकाल में दोबारा प्रकाशित हुईं तो स्वयं उन्होंने उनमें कुछ हेरफेर किया और कुछ भागों को निकाल दिया। उनकी मौत के पश्चात प्रकाशित होने वाले उपन्यासों और आलेखों में से अधिकतर में कुछ न कुछ बदलाव अवश्य किया गया है। कुछ बदलाव तो खुद उनके मित्रों ने दूसरी बार संकलन करने के क्रम में किया और कुछ तीखी प्रतिक्रिया के बाद किया गया। उनके प्रारंभ के उपन्यास *जंकी* और *नैक्ड लंच* में संभोग के अनुभव की खुले रूप में अभिव्यक्ति है। उनकी मृत्यु के पश्चात जब ये दोबारा प्रकाशित हुए तो उनमें बहुत काट-छांट कर दी गई। □